

पूर्वोत्तर मानसून

प्रलिस के लयि

उत्तर-पूरवी मानसूनी वरषा, मैडेन-जूलयिन ऑसलेशन, अंतः उषणकटबिधीय अभसिरण कषेत्र, ला नीना, अलनीनो

मेन्स के लयि

प्रायद्वीपीय कषेत्रों में उत्तर-पूरवी मानसूनी वरषा में गरिवट के कारण और प्रभाव

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के दक्षिणी प्रायद्वीपीय कषेत्रों में उत्तर-पूरवी मानसूनी वरषा में गरिवट देखी गई।

मुख्य बदि:

- **भारत में वरषा का पैटर्न:** भारत एक वरष में **दो मौसमी वरषा** प्रापत करता है।
 - देश की वार्षिक वरषा का लगभग 75 प्रतिशत **दक्षिण-पश्चिम मानसून** (जून-सर्तिंबर) से प्रापत होता है।
 - दूसरी ओर, **पूर्वोत्तर मानसून** (अक्टूबर-दसिंबर) तुलनात्मक रूप से छोटे पैमाने का मानसून होता है जो दक्षिणी प्रायद्वीप तक ही सीमति है।
- **उत्तर-पूरव मानसून से जुडे कषेत्र:**
 - इसे **शीतकालीन मानसून** भी कहा जाता है, पूर्वोत्तर मानसून से जुडी बारशितमलिनाडु, पुडुचेरी, कराइकल, यनम, तटीय आंध्र प्रदेश, केरल, उत्तर आंतरकि कर्नाटक, माहे और लक्षद्वीप के लयि महत्वपूरण है।
 - कुछ दक्षिण एशियाई देश जैसे **मालदीव, श्रीलंका और म्यांमार** में भी अक्टूबर से दसिंबर के दौरान रकिॉर्ड वरषा दर्ज करते हैं।
 - तमलिनाडु इस दौरान अपनी वार्षिक वरषा का लगभग 48 प्रतिशत (447.4 mm) प्रापत करता है, यह वरषा राज्य में कृषि गतिविधियों और जलाशय प्रबंधन के लयि महत्वपूरण कारक है।
- देश से दक्षिण-पश्चिम मानसून के पूरी तरह से लौट जाने के बाद मध्यअक्टूबर तक हवा का पैटर्न तेज़ी से दक्षिण-पश्चिम से उत्तरी-पूरवी दिशा में बदल जाता है।
 - दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसम के बाद की अवधि (अक्टूबर-दसिंबर) उत्तरी हदि महासागरीय कषेत्र (अरब सागर तथा बंगाल की खाडी) में चक्रवाती गतिविधि के लयि चरम समय है।
 - कम दबाव प्रणाली या चक्रवात के गठन से जुडी हवाएँ इस मानसून को प्रभावति करती हैं।
 - इसलयि चक्रवातों की समय पर जानकारी आकस्मिकि योजना बनाने हेतु सरकार तथा आपदा प्रबंधन टीम के लयि महत्वपूरण हो जाता है।

इस पूर्वोत्तर मानसून में कमी के कारण:

प्रशांत महासागर में ला नीना की स्थतियों:

- ला नीना (La Niña) की स्थति दक्षिण पश्चिम मानसून से जुडी वरषा को बढ़ाती है लेकिन पूर्वोत्तर मानसून से जुडी वरषा पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।
- ला नीना मध्य और पूरवी भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह के तापमान के बड़े पैमाने पर शीतलन को संदर्भति करता है जो **उषणकटबिधीय वायुमंडलीय परसिंचरण**, जैसे-हवाओं, दबाव और वरषा में परविरतन के साथ जुड़ा हुआ है।
- इसका आमतौर पर मौसम और जलवायु पर वपिरीत प्रभाव पड़ता है जैसे कएल नीनो जो **तथाकथतिअल नीनो दक्षिणी दोलन (El Niño Southern Oscillation)** का गर्म चरण है।

- प्रशांत महासागर में **पेरू** के निकट समुद्री तट के गर्म होने की घटना को अल-नीनो कहा जाता है।
- अल-नीनो एवं ला-नीना पृथ्वी की सर्वाधिक शक्तिशाली घटनाएँ हैं जो पूरे ग्रह के आधे से अधिक भाग के मौसम को परिवर्तित करती हैं।
- अल-नीनो एक वैश्विक प्रभाव वाली घटना है और इसका प्रभाव क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। स्थानीय तौर पर प्रशांत क्षेत्र में मत्स्य उत्पादन से लेकर दुनिया भर के अधिकांश मध्य अक्षांशीय हिसिंसों में बाढ़, सूखा, वनाग्नि, तूफान या वर्षा आदि के रूप में इसका असर सामने आता है।

अंतः उष्णकटबंधीय अभिसरण क्षेत्र (Inter Tropical Convective Zone):

- ITCZ पृथ्वी पर भूमध्य रेखा के पास वृत्ताकार क्षेत्र है। यह पृथ्वी पर वह क्षेत्र है, जहाँ उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धों की व्यापारिक हवाएँ, यानी पूर्वोत्तर व्यापारिक हवाएँ तथा दक्षिण-पूर्व व्यापारिक हवाएँ एक जगह मिलती हैं।
- भूमध्य रेखा पर सूर्य का तीव्र तापमान और गर्म जल ITCZ में हवा को गर्म करते हुए इसकी आर्द्रता को बढ़ा देते हैं जिससे यह उत्प्लावक बन जाता है।
- व्यापारिक हवाओं के अभिसरण (Convergence) के कारण यह ऊपर की तरफ उठने लगता है। ऊपर की तरफ उठने वाली यह हवा फैलती है और ठंडी हो जाती है, जिससे भयावह आँधी तथा भारी वर्षा शुरू हो जाती है।

अन्य महत्वपूर्ण वायुमंडलीय परिसंचरण:

- **मैडेन-जूलियन ऑसिलेशन (Madden-Julian Oscillation):** मैडेन-जूलियन ऑसिलेशन को भूमध्य रेखा के पास पूर्व की ओर सक्रिय बादलों और वर्षा के प्रमुख घटक या निर्धारक (जैसे मानव शरीर में नाड़ी (Pulse) एक प्रमुख निर्धारक होती है) के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो आमतौर पर हर 30 से 60 दिनों में स्वयं की पुनरावृत्ति करती है।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/subdued-northeast-monsoon>

